

विचार बिन्दु

मानव नक़ल करने वाला प्राणी है और जो सबसे आगे रहता है वो नेतृत्व करता है। -शिलर

भारत : ऑपरेशन सिंदूर के बाद चीन की चुनौती और गहरी



के.के. गुप्ता

डूंगरपुर नगर परिषद के पूर्व अध्यक्ष के. के. गुप्ता ने जल संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किए हैं, जिससे दक्षिणी राजस्थान का वागड क्षेत्र राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक बेजोड मॉडल बन कर उभरा है। उनके प्रयासों ने न केवल स्थानीय जल संकट कम हुआ है, बल्कि अन्य राज्य के नगर निकाय भी इससे प्रेरित हुए हैं। उनके नवाचार और समुदाय आधारित दृष्टिकोण ने जल संकट से जुझ रहे क्षेत्रों को एक नई दिशा दी है। उनके इन प्रयासों की न केवल स्वयं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने प्रशंसा की है वरन् इसके लिए उन्हें वॉटर हीरो सहित अन्य कई राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय अवार्ड मिले हैं।

हाल ही के.के. गुप्ता की पहल पर डूंगरपुर जिला प्रशासन ने 1०0 तालाबों को गहरा कराने तथा उनकी साफ सफाई एवं सौन्दर्यकरण के काम हाथ में लिए गए हैं। भीषण गर्मी और मिट्टी भराव के कारण डूंगरपुर जिले में कई तालाब सूखने की कगार पर पहुँच गए थे, जिससे जल संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। इस समस्या के समाधान के लिए, जिला कलेक्टर ने तालाबों की

गहराई बढ़ाने और जल संचयन की क्षमता को सुधारने के लिए गंभीर प्रयास किए हैं। गुप्ता के इन प्रयासों के लिए स्थानीय नागरिक उन्हें वागड के नए भगीरथ की उपमा देने लगे हैं।

के.के. गुप्ता ने अपने नगर परिषद अध्यक्षीय कार्यकाल में वर्षा जल संचयन में नवाचार कर कम लागत वाला रेनवाटर हार्वेस्टिंग मॉडल तैयार करने में सफलता हासिल की। गुप्ता के नेतृत्व में डूंगरपुर में एक अभिनव वर्षा जल संचयन प्रणाली विकसित की गई, जिसमें छतों से एकत्रित वर्षा जल को सीधे घरों के मौजूदा बोरवेल में भेजा गया। इस प्रणाली में पाइप के भीतर ही रेत फिल्टर और बैकवॉश की सुविधा शामिल की गई, जिससे जल शुद्धिकरण सुनिश्चित हुआ। डूंगरपुर के इस मॉडल की सफलता को देखते हुए, अन्य राज्य सरकारों ने भी इसे अपने प्रदेश में लागू करने का निर्णय लिया। गुप्ता ने वर्षा जल संचयन, पुराने तालाबों और जल स्रोतों का पुनर्जीवन, और जल संरक्षण के लिए विभिन्न पहलें शुरू कीं।

इसी प्रकार उनके गंभीर प्रयासों से डूंगरपुर नगर के पारंपरिक जल स्रोतों का पुनरुद्धार कर तालाबों और बावडियों का जीर्णोद्धार कराया गया। गुप्ता ने डूंगरपुर में पुराने तालाबों, बावडियों और जल स्रोतों की सफाई और गहरीकरण का कार्य किया, जिससे वर्षा जल का संचयन और भूजल स्तर में वृद्धि संभव हुई। स्थानीय ग्राम सभाओं और समुदायों के साथ मिलकर, गुप्ता ने सामुदायिक तालाबों का निर्माण और रखरखाव सुनिश्चित किया, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में जल संकट को कम किया जा सका।

उन्होंने ई-कचरा प्रबंधन, प्लास्टिक अपशिष्ट नियंत्रण, और कचरा प्रबंधन के लिए जागरूकता

जल संरक्षण में उपयोगी साबित हो रहा फार्म पौंड एवं डिग्गी का उपयोग

भजनलाल सरकार द्वारा दी जाने वाली सब्सिडी से कृषक लाभान्वित हो रहे हैं



नेमीचंद

जल के बिना किसी भी प्रकार के जीवन और वनस्पति की कल्पना

भी नहीं की जा सकती। वर्तमान समय में जल की कमी एक गंभीर समस्या बनती जा रही है।

अल्पवृष्टि और अनियमित मानसून के कारण किसानों को सिंचाई के लिए जल की भारी कमी का सामना करना पड़ता रहा है। इस स्थिति में जल संरक्षण आवश्यक हो गया है। जल संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए भजनलाल सरकार द्वारा 5 जून से 2० जून तक 'वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान' चलाया जा रहा है।

सिंचाई की आवश्यकता को पूरा करने में फार्म पॉन्ड और डिग्गी

उपयोगी सिद्ध हो रहे :- फार्म पॉण्ड एक कृत्रिम जलाशय है जिसे खेतों में वर्षा जल को एकत्र करने के लिए बनाया जाता है। यह एक गड्ढे के रूप में बनाया जाता है जिसे पॉलीथिन से लाइन किया जाता है ताकि जल का रिसाव न हो।

इसके पानी का उपयोग सिंचाई, पशुओं के लिए पानी, मछली पालन आदि के लिए किया जाता है। फार्म पौंड में वर्षा के जल को इकट्ठा कर जल की बर्बादी को रोका जाता है और सूखे के समय इसमें सिंचाई के लिए जल उपलब्ध रहता है। फार्म पौंड मछली पालन द्वारा अतिरिक्त आय

का स्रोत भी बनता जा रहा है।

नहरी क्षेत्रों में पानी को इकट्ठा करने के लिए डिग्गी का उपयोग किया जाता है। जिसका निर्माण सीमेंट और ईंटों से किया जाता है। यह एक प्रकार की खुली टंकी होती है, जिसमें नहर या पाइप से जल लाकर एकत्र किया जाता है। राजस्थान जैसे सूखे या कम वर्षा वाले क्षेत्रों में फार्म पौंड और डिग्गी से सिंचाई बहुत महत्वपूर्ण साधन है। इसके माध्यम से वर्षा जल को संग्रहित किया जा सकता है। फार्म पौंड और डिग्गी जैसे जल संरक्षण उपाय आज की आवश्यकता

है। यदि इन तकनीकों को व्यापक रूप से अपनाया जाए तो जल संकट की समस्या से काफी हद तक छुटकारा पाया जा सकता है। वर्तमान समय में राज्य सरकार द्वारा दी जाने वाली सब्सिडी का फायदा ले कर किसान इनका निर्माण तीव्रता से कर रहे हैं। हमें जल की महत्ता को समझते हुए हर संभव प्रयास करना चाहिए ताकि भविष्य की पीढ़ियों के लिए जल सुरक्षित रह सके।

नेमीचंद,
सहायक जनसंपर्क
अधिकारी, सूचना एवं
जनसंपर्क निदेशालय

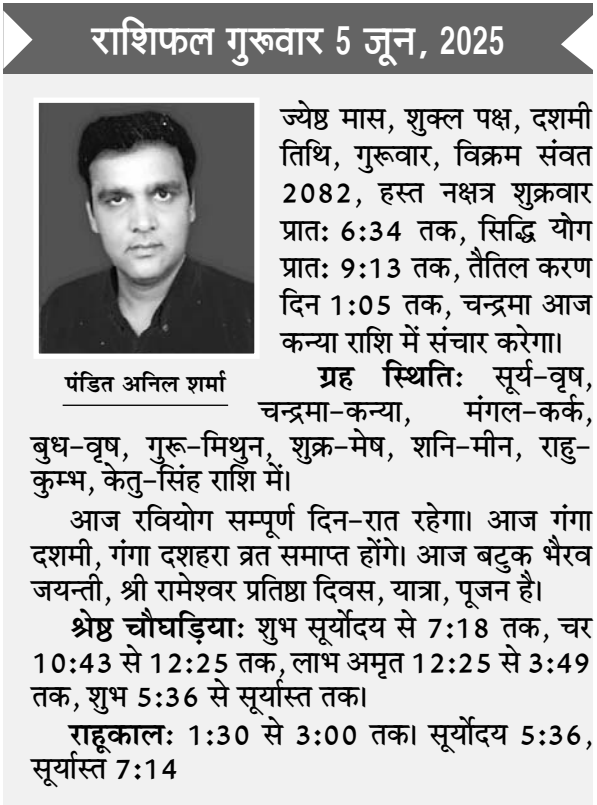
अजमेर में बरसात होने से तापमान में गिरावट आई

गुरुवार व शुक्रवार को भी दोपहर बाद आंधी व बारिश की संभावना

अजमेर, (कासं)। पिछले तीन दिन से प्रदेश के तेज हवाओं के साथ बरसात का दौर बुधवार को भी जारी रहा। बुधवार सुबह 1१ बजे करीब आधे घंटे तक हुई तेज बरसात से तापमान में गिरावट हुई। हुई तो वहीं मौसम खुसनुमा हो गया। तेज बरसात से सड़कों पर पानी बह निकला। मॉर्टिडल ब्रिज के पास सड़क पर पानी भर जाने से नाले का लेवल पता नहीं चलने पर बाइक सवार पिता-पुत्र बाइक सहित

जारी रहेगा। गत चार दिनों से तापमान में गिरावट जारी है। 1 जून को अधिकतम तापमान 37 डिग्री और न्यूनतम तापमान 25.6 डिग्री दर्ज किया गया था, जबकि 2 जून को अधिकतम तापमान 36.4 डिग्री और न्यूनतम 23.3 डिग्री रहा। 3 जून को अधिकतम 3०.7 डिग्री और न्यूनतम 2० डिग्री रिकॉर्ड रहा, तीन दिन दोपहर पारे में 6.3 डिग्री और रात के तापमान 5.6 डिग्री गिरावट दर्ज की गई। बुधवार

को भी दोपहर दो बजे तापमान 33 डिग्री दर्ज किया गया। अगले दिनों में हवाओं के साथ बरसात का दौरा रहेगा। बुधवार को सुबह दस बजे करीब आसमान में ताले बादल छाए और करीब 1१ बजे तेज हवाओं के साथ आधे घंटे जल्दकर बरसात हुई। बरसात के कारण सड़कों पर पानी भर गया और ऐसे में कई जगह सड़कों व नालों का पानी बराबर हो गया। राहगीरों व वाहन चालकों को वाहन चलाने में परेशानी हुई।



राशिफल गुरुवार 5 जून, 2025



पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, गुरुवार, विक्रम संवत 2०82, हस्त नक्षत्र शुक्रवार प्रातः 6:34 तक, सिद्धि योग प्रातः 9:13 तक, तैतिल करण दिन 1:05 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

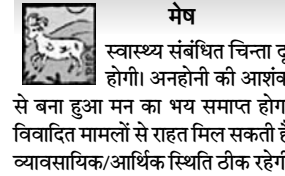
ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क,

बुध-वृष, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। आज गंगा दशमी, गंगा दशहरा व्रत समाप्त होंगे। आज बटुक भैरव जयन्ती, श्री रामेश्वर प्रतिष्ठा दिवस, यात्रा, पूजन है।

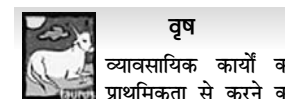
श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:18 तक, चर 1०:43 से 12:25 तक, लाभ अमृत 12:25 से 3:49 तक, शुभ 5:36 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:36, सूर्यास्त 7:14



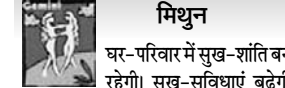
मेष

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का थय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



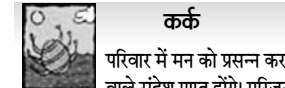
वृष

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। संभावित स्रोत से धन प्राप्त होगा।



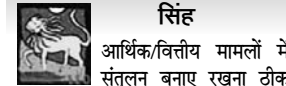
मिथुन

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।



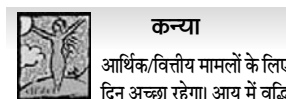
कर्क

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिवारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।



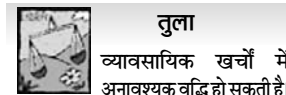
सिंह

आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संभावित स्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक अड़चनों दूर होने लेंगी। परिवार में शुभ-मौंगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



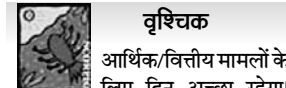
कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। व्यावसायिक अनुभव प्राप्त हो सकते हैं। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



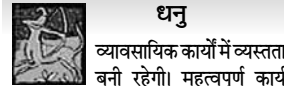
तुला

व्यावसायिक खर्चों में अनिवार्य वृद्धि हो सकती है। नेकीरपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आज अमंगल कार्यों में समय खराब होगा। मन में अस्तोष बना रहेगा।



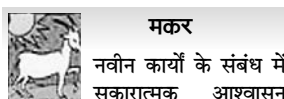
वृश्चिक

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क



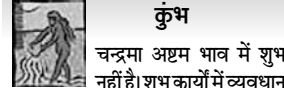
धनु

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बन्ने लेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।



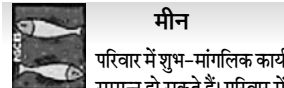
मकर

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटक के हुए कार्य बन्ने लेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेंगी।



कुंभ

चन्द्रमा शुभम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। व्यावसायिक विवादों से बचना ठीक रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।



मीन

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

चीन की सैन्य, आर्थिक और जल संसाधनों की रणनीति भारत के लिए दीर्घकालिक चुनौतियां पेश करती है। अगर भारत को इन चुनौतियों का सामना करना है, तो उसे अपनी घरेलु विनिर्माण क्षमता को बढ़ाना होगा, सैन्य आधुनिकीकरण को और तेज करना होगा, और क्षेत्रीय सहयोगियों के साथ अपनी स्थिति को और मजबूत करना होगा।

बहिष्कार हो, देश के व्यापारी विदेशी सामान नहीं बेचेंगे, देश के नागरिक विदेशी सामान नहीं खरीदेंगे।" यह आह्वान ऑपरेशन सिंदूर को जनरल से जीतने की भावना से जोड़ा गया है। हालांकि, यह नीति भारत को आर्थिक वास्तविकताओं के साथ तालमेल नहीं बिठाती। भारत का चीन के साथ व्यापार घाटा 99 बिलियन डॉलर से अधिक है, और कई महत्वपूर्ण क्षेत्र जैसे कि रसायन, फार्मास्यूटिकल्स, और इलेक्ट्रॉनिक्स चीनी आयात पर निर्भर हैं। 2०24 में भारत-चीन व्यापार 118 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया, जो अमेरिका के साथ भारत के 140 बिलियन डॉलर के व्यापार के करीब है।

चीनी झालर, होली के रंग, या मूर्तियाँ जैसे छोटे सामानों का बहिष्कार प्रतीकात्मक हो सकता है, लेकिन यह भारत की आपूर्ति श्रृंखला पर निर्भरता को कम करने में ज्यादा प्रभावी नहीं होगा। इसके अलावा, चीनी सामान के बहिष्कार का आ न भारत की घरेलू विनिर्माण क्षमता को बढ़ाने की तत्काल आवश्यकता को उजागर करता है। भारत ने हाल के वर्षों में 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' जैसे अभियानों के माध्यम से स्वदेशी विनिर्माण को बढ़ावा देने की कोशिश की है, लेकिन प्रगति धीमी रही है। रसायनों, इलेक्ट्रॉनिक्स और भारी मशीनरी जैसे क्षेत्रों में भारत अभी भी आयात पर निर्भर है। अगर भारत को चीन पर अपनी निर्भरता कम करनी है, तो उसे दीर्घकालिक निवेश, अनुसंधान और विकास, और तकनीकी नवाचार में तेजी लानी होगी। लेकिन यह प्रक्रिया समय लेने वाली है, और तत्काल बहिष्कार का आह्वान अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। उदाहरण के लिए, फार्मास्यूटिकल उद्योग में कच्चे माल का 6०-7०% हिस्सा चीन से आता है, और इसका विकल्प तुरंत खोजना असंभव है।

चीन की रणनीतिक चालों और भारत की आर्थिक निर्भरता के बीच भारत की स्थिति को लाचारी के रूप में देखा जा सकता है। चीनी सामान के बहिष्कार और लगातार चीन से बढ़ता आयात वैसा ही किस्सा है जैसे एकतर्फ सरकार गुटखा तम्बाकू शराब पर जीएसटी लगाकर कमाई कर रही है दूसरी तरफ इनपर रोक के लिए विभाजन चलाती है। ऑपरेशन सिंदूर ने भारत की सैन्य ताकत और दृढ़ संकल्प को तो प्रदर्शित किया, लेकिन यह भी स्पष्ट है कि चीन के साथ प्रत्यक्ष टकराव के लिए भारत को अभी और तैयारी की जरूरत है। हस्तलज नदी के प्रवाह को मोड़ने जैसे कदमों पर भारत को मान रहना इस बात का संकेत है कि वह अभी पूरी तरह से चीन की चुनौतियों का जवाब देने की स्थिति में नहीं है। इसके अलावा, पाकिस्तान को परमाणु हथियारों और उन्नत तकनीकी आपूर्ति में चीन की भूमिका के लिए एक दीर्घकालिक खतरा है। अगर पाकिस्तान अपनी परमाणु क्षमता को और बढ़ाता है, तो यह भारत के लिए रणनीतिक संतुलन को और जटिल कर देगा।इसके बावजूद, भारत ने कुछ क्षेत्रों में अपनी स्थिति मजबूत की है। ऑपरेशन सिंदूर ने यह साबित किया कि भारत अब परमाणु ब्लैकमेल को सहन नहीं करेगा।

12 मई 2025 को अपने राष्ट्र के नाम संबोधन में, प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि "सीमा पार आतंकवाद को युद्ध की काव्याई माना जाएगा, और पानी व खून एक साथ नहीं बह सकता।" यह बयान भारत की नई 'मोह नीति' का हिस्सा है, जो आतंकवाद के खिलाफ सख्त रुख और रणनीतिक जवाबी कार्रवाइयों पर जोर देती है। भारत ने अपनी सैन्य आधुनिकीकरण को भी तेज किया है, जिसमें अगिन-आई ग्राइम और अगिन-वी मिसाइलों का परीक्षण और दूसरी परमाणु-संचालित पनडुब्बी को चालू करना शामिल है। इसके अलावा, भारत हिंद महासागर और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए अन्य देशों के साथ सैन्य और कूटनीतिक सहयोग बढ़ा रहा है। लेकिन इन प्रयासों के बावजूद, चीन की रणनीतिक घेराबंदी और पाकिस्तान को उसका समर्थन भारत के लिए एक जटिल चुनौती बना हुआ है। चीन ने भारत और पाकिस्तान के बीच तथ्यायी युद्धिवराम की वकालत की है, लेकिन उसका रुख स्पष्ट रूप से पाकिस्तान के पक्ष में झुका हुआ है। बीजिंग ने बा-बार भारत के हमलों की खबरों को दबाने की कोशिश की, जबकि पाकिस्तानी दावों को बढ़ावा दिया। यह कूटनीतिक दोहरापन भारत के लिए एक और चुनौती है, क्योंकि चीन एक ओर शांति की बात करता है, तो दूसरी ओर पाकिस्तान को सैन्य और आर्थिक समर्थन देता है।

भारत की नीतिगत लाचारी का एक और पहलू यह है कि वह चीन के साथ अपने आर्थिक और कूटनीतिक संबंधों को पूरी तरह से तोड़ नहीं सकता। रूस के साथ भारत के ऐतिहासिक संबंध और आर्थिक हित इसे चीन के खिलाफ एकतर्फा रुख अपनाने से रोकते हैं। डीआईए की रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत 2०25 में भी रूस के साथ अपने संबंधों को बनाए रखेगा, क्योंकि यह अपने रक्षा और आर्थिक उद्देश्यों के लिए महत्वपूर्ण मानता है। यह स्थिति भारत को एक जटिल भू-राजनीतिक संतुलन बनाए रखने के लिए मजबूर करती है, जहां उसे एक ओर चीन का मुकाबला करना है, तो दूसरी ओर रूस जैसे सहयोगियों के साथ संबंध बनाए रखना है। अंत में, ऑपरेशन सिंदूर ने भारत की सैन्य और कूटनीतिक ताकत को तो प्रदर्शित किया, लेकिन इसने चीन की रणनीतिक चालों और भारत की आर्थिक निर्भरता को भी उजागर कर दिया। चीनी सामान के बहिष्कार का आह्वान, हालांकि जनता में जोश भरने वाला हो सकता है, लेकिन यह भारत की आर्थिक वास्तविकताओं के साथ तालमेल नहीं बिठाता। चीन की सैन्य, आर्थिक और जल संसाधनों की रणनीति भारत के लिए दीर्घकालिक चुनौतियां पेश करती है। अगर भारत को इन चुनौतियों का सामना करना है, तो उसे अपनी घरेलू विनिर्माण क्षमता को बढ़ाना होगा, सैन्य आधुनिकीकरण को और तेज करना होगा, और क्षेत्रीय सहयोगियों के साथ अपनी स्थिति को और मजबूत करना होगा। लेकिन यह सब एक लंबी और जटिल प्रक्रिया है, और तब तक भारत को चीन की चालों और पाकिस्तान के साथ तनाव के बीच एक नाजुक संतुलन बनाए रखना होगा। ऑपरेशन सिंदूर ने एक नई शुरुआत की है, लेकिन यह शुरुआत भारत के लिए अवसरों के साथ-साथ नई चुनौतियां भी लाई है।

—**अतिथि सम्पादक,**
राजेन्द्र मोहन शर्मा,
वरिष्ठ साहित्यकार, शिक्षा विद और चिन्तक